IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 1, March 2023

संत मत के दृष्टिकोण से आध्यात्मिक चेतना का अध्ययन

बैकुंठ बिहारी[1] and डॉ. सुषमा रानी[2]

[1]शोधार्थी, संस्कृत विभाग

[2] सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग

ओ. पी. जे. एस. विश्वविद्यालय, राजस्थान

प्रस्तावना: संत मत भारतीय सांस्कृतिक और धार्मिक तथा आध्यात्मिक विचारधारा का महत्वपूर्ण हिस्सा है। इस मत के अनुयायियों ने आध्यात्मिकता को अपने जीवन का मौल्यांकन करने का एक नया दृष्टिकोण प्रदान किया है। इस पेपर में हम संत मत के दृष्टिकोण से आध्यात्मिक चेतना का विश्लेषण करेंगे और जानेंगे कि कैसे यह मत व्यक्ति को अपने आत्मा के साथ संबंधित करने के लिए एक मार्गदर्शक भूमिका निभाता है।

सन्दर्भ

[1]. कबीर की साखी, पृ० 332

[2]. पलटू साहेब की बानी भाग 3 पृष्ठ

[3]. पलटू साहेब की बानी भाग 2 पृ0

[4]. प्रेमपत्र, भाग 4 पृ० 90, पैरा 258

[5]. एम हिरियन्ना, भारतीय दर्शन की रूपरेखा पृ0 188-189

[6]. तैत्रीय उपशा बी 1-1

[7]. पलटू साहेब की बानी, भाग 2, झूला

[8]. कबीर की साखी, पृ० 377

[9]. सारबचन नज्म, सुरत सम्वाद 26 / 1. 42, 43, 45

[10]. दादू ग्रन्थावली भाग 1, सजीवन 35

[11]. कबीर साहब की शब्दावली. भाग 1, पृ0 38

[12]. गुरु तेग बहादुर, आदि ग्रन्थ, पृ0 685

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 1, March 2023

[13]. कबीर ग्रन्थावली. पृ0 50, साखी 8

[14]. कबीर ग्रंथावली श्लोक 167, पृ 108

[15]. हिन्दी काव्य की निर्गुण धारा, पृ 140

[16]. हिन्दी काव्य की निर्गुण धारा, पृ 141